I J C R M

International Journal of Contemporary Research In Multidisciplinary

Research Article

पं. श्रीराम दवेकृत मेघोपालम्भनम् खण्डकाव्य में लोक-संवेदना

रानू शर्मा [1*], डॉ. त्रिलोक चन्द अवस्थी [2]

[1] शोधार्थी, संस्कृत, दर्शन एवं वैदिक अध्ययन विभाग, वनस्थली विद्यापीठ, भारत

[2] निर्देशक, सहायक आचार्य, संस्कृत, दर्शन एवं वैदिक अध्ययन विभाग, वनस्थली विद्यापीठ, भारत

Corresponding Author: * रानू शर्मा

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.20730660

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन में पं. श्रीराम दवे के खण्डकाव्य **'मेघोपालम्भम्'** का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। यह काव्य आधुनिक संस्कृत साहित्य की उस प्रगतिशील प्रवृत्ति का प्रतिनिधित्व करता है जिसमें युगबोध, सामाजिक चेतना और प्रकृति-मानव संबंधों का सजीव चित्रण मिलता है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि कवि ने मेघों को केवल प्राकृतिक तत्व के रूप में नहीं, बल्कि मानवीकृत रूप में प्रस्तुत कर उनके माध्यम से समाज की आशा-निराशा, विषमता, ग्रामीण जीवन की पीड़ा, कृषक जीवन की कठिनाइयों तथा पर्यावरणीय चिंताओं का यथार्थ चित्रण किया है।

काव्य में कालिदास की **'मेघदूत'** परंपरा का प्रभाव दिखाई देता है, परंतु दवे जी ने इसे आधुनिक संदर्भों से जोड़कर एक नवीन सामाजिक दृष्टि प्रदान की है। इसमें अतिवृष्टि और अनावृष्टि दोनों स्थितियों का मार्मिक चित्रण मिलता है, जो ग्रामीण जीवन की आर्थिक और सामाजिक समस्याओं को उजागर करता है। साथ ही, कवि ने लोकतांत्रिक व्यवस्था, सामाजिक असमानता और मानवीय संवेदनाओं पर भी गहन विचार प्रस्तुत किए हैं।

अंततः यह कहा जा सकता है कि **'मेघोपालम्भम्' केवल प्रकृति-वर्णन नहीं, बल्कि सामाजिक यथार्थ, मानवीय संवेदना और पर्यावरण चेतना से युक्त एक प्रगतिशील खण्डकाव्य है**, जो आधुनिक संस्कृत साहित्य की महत्वपूर्ण कृति के रूप में स्थापित होता है।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2583-7397
- **Received:** 05-01-2025
- **Accepted:** 25-02-2025
- **Published:** 28-02-2025
- **IJCRM:**4(1); 2025: 300-303
- **©2025, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

रानू शर्मा, डॉ. त्रिलोक चन्द अवस्थी, पं. श्रीराम दवेकृत मेघोपालम्भनम् खण्डकाव्य में लोक-संवेदना. Int J Contemp Res Multidiscip. 2025;4(1):300-303.

Access this Article Online

www.multiarticlesjournal.com

कुंजी शब्द: पं. श्रीराम दवे, मेघोपालम्भम्, आधुनिक संस्कृत साहित्य, युगबोध, प्रगतिशील काव्य, प्रकृति चित्रण, मानवीकरण, ग्रामीण जीवन, सामाजिक विषमता, पर्यावरण चेतना

© 2025 रानू शर्मा, डॉ. त्रिलोक चन्द अवस्थी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

परिचय

पं. श्रीराम दवे आधुनिक युग के कवि हैं । इन्होंने युग-प्रवृत्तिबोधक अनेक महाकाव्य एवं खण्डकाव्यों की सर्जना की है । कवि के काव्यों में अपने समकालिक सभी पक्षों का यथार्थ चित्रण मिलता है । मेघोपालम्भनम् खण्डकाव्य भी उनमें से एक है। आधुनिकता की प्रमुख विशेषता युगबोध और समकालिक चेतना है। आधुनिकता का अर्थ केवल नवीन विषय ग्रहण करना नहीं, बल्कि अपने युग को साहित्यिक चेतना का अंग बनाना भी है। अतः आधुनिक संस्कृत साहित्य में युगबोध एक केंद्रीय विशेषता है, जो उसे पूर्ववर्ती परम्परा से जोड़ते हुए भी अलग पहचान देता है ।[i] आधुनिकता संस्कृत साहित्य में किसी एक शैली का नाम नहीं, बल्कि उस समग्र चेतना का नाम है जिसके द्वारा साहित्य अपने समय की धड़कनों को ग्रहण करता है और उन्हें कलात्मक रूप में प्रस्तुत करता है ।[ii]

राधावल्लभ त्रिपाठी ने संस्कृत कवियों की इस क्षमता पर बल दिया है कि उन्होंने अपने समय को अपनी रचनाओं में अनेक छवियों में अभिव्यंजित किया है। उनके अनुसार संस्कृत कवियों के "समकालिक बोध" पर ध्यान दिए बिना साहित्य की सही पहचान संभव नहीं है। संस्कृत साहित्य में आधुनिकता की प्रमुख विशेषताएँ हैं - समकालीन यथार्थ के प्रति सजगता, प्रखर युगबोध, परम्परा और नवीनता का समन्वय, विषय-क्षेत्र का विस्तार, सामाजिक-राजनीतिक चेतना, भाषागत-शिल्पगत प्रयोगशीलता तथा मानवीय अनुभवों की अधिक प्रत्यक्ष और बहुआयामी अभिव्यक्ति।

काव्य की व्यापक सृष्टि में कवि को एक स्वतंत्र रचनाकार के रूप में देखा जाता है, जो अपनी कल्पना के आधार पर एक नया संसार गढ़ता है। जहाँ ब्रह्मा का सृजन नियमों से बंधा और स्थूल जगत तक सीमित होता है, वहीं कवि के लिए सृजन की कोई सीमा नहीं होती। वह जड़ वस्तुओं में भी प्राण फूँक देता है और उन्हें मानवीय संवेदनाओं से युक्त कर देता है। पेड़ों और फूलों में वह रिश्तों का संसार रचता है, लताओं को आलिंगन करती कामिनियों के रूप में देखता है, और चंद्रमा तक को सौंदर्य का प्रतीक बना देता है।

भारतीय काव्य-परंपरा में महाकवि कालिदास ने भी बादलों को दूत के रूप में चित्रित किया था, जो विरही यक्ष के संदेशवाहक बने। कवि दवे को मेघोपालम्भनम् खण्डकाव्य लिखने की प्रेरणा कालिदास की कृति मेघदूत के आषाढ़ मास के मेघ की प्रकृति से मिली होगी। क्योंकि महाकवि श्रीराम दवे ने ग्रन्थारम्भ में मेघदूत की प्रसिद्ध पंक्ति "आषाढस्य प्रथमदिवसे मेघमाश्लिष्टसानुः" की ही अपने शब्दों में आवृत्ति की है।

आषाढस्य प्रथमदिवसादम्बरे कीलिताक्षी,
पन्थानं ते जलद ! सततं वीक्षते भूमिरेषा।
धर्मोद्भूतैज्वलनसदृशैस्तप्त गात्रोग्रवातैः,
नो जानीषे गमयति कथं वासरान् त्वद्वियोगैः।।[iii]

इसी परंपरा को आगे बढ़ाते हुए "मेघोपालम्भनम्" के कवि मेघों से संवाद स्थापित करते हैं। वे मेघों के माध्यम से केवल प्राकृतिक सौंदर्य का ही नहीं, बल्कि समाज की आशाओं, निराशाओं, सामाजिक विषमताओं, भौतिक लिप्साओं और पर्यावरणीय चिंताओं का भी यथार्थ चित्रण करते हैं। कवि लोक जीवन के प्रति पूर्ण संवेदनशील है ।

पंडित श्रीराम दवे के काव्य मेघोपालम्भ में प्रकृति का अत्यंत सुंदर, जीवंत और भावपूर्ण चित्रण मिलता है। कवि ने बादलों, वर्षा, खेतों, पेड़ों और ग्रामीण वातावरण का ऐसा वर्णन किया है जिससे प्रकृति सजीव प्रतीत होती है। आषाढ़ के प्रथम दिन ही पृथ्वी को प्रसन्न करते हुये बादल पृथ्वी को हरी भरी और सुन्दर बना देते हैं। जिससे खेतों की शोभा बढ़ जाती है। किसान प्रसन्न होते हैं। तालाब भी जल से परिपूर्ण हो जाता है। सूखी नदियाँ भी सलिल सुधा से तृप्ति पा जाती हैं। वस्तुतः वह धराधन्य है, जिसका जलाभिषेक मेघ करता है। जिसकी कोख में प्राणी प्रसन्न रहते हों, अनेक वृक्ष कन्दमूल और औषधियाँ पैदा होती हों, तथा जो सर्वदा अपने सामने बादलों की विलास लीला देखकर प्रसन्न होती रहती हैं।

कवि ने मेघों के प्रति मिश्रित भाव प्रकट किए हैं - कहीं उनकी उदारता और वर्षा से जीवनदायिनी भूमिका की प्रशंसा की है, तो कहीं उनके न बरसने पर शिकायत और उपालम्भ भी व्यक्त किया है। मेघों की अनुकम्पा के बिना अकाल पीडित जनों की क्या दुर्दशा होती है। इसका मार्मिक वर्णन इसमें किया गया है। मरुभूमि में निवास करने वाली एक कृषक नवोढ़ा मेघ की प्रतीक्षा करते हुये वर्षा ऋतु में भी मेघ के द्वारा वर्षा न करने पर उसको उपालम्भ देती हुयी कहती है -

हे मेघ ! आषाढ के प्रथम दिन से लगातार यह धरती आकाश की ओर टकटकी लगाये तुम्हारी राह देख रही है। गर्मी के कारण आग उगलती उग्र हवाओं से तप्तांगी यह तपस्विनी तुम्हारे वियोग में न जाने कैसे दिन बिता रही है। जब सावन के बीत जाने पर भी बादल नहीं आए तो धरती का धैर्य टूट गया वह अपने इस शोक को कैसे रोक पाएगी । आकाश भी बादलों से सूना हो गया, हवा में जल की बूंदें नही हैं। वर्षा नहीं होने पर रास्ते भी सूखे पड़े हैं । धूप तप रही है। नदियाँ भी सूख गई हैं। वृक्ष और लताऐं भी सूख गई हैं। कृषक पत्नी दूध और भोजन के दुर्लभ हो जाने के कारण अपने बच्चों के व्याकुल मुख देखकर दुखी हो रही है। वह बेचारी वर्षा आने की आशा से आसमान को देख रही है। इस प्रकार बादलों की कृपा के बिना धरा की दुर्दशा का वर्णन किया है ।

कवि बादलों का कभी करालिनियों, तो कभी चपल बालकों के रूप में मानवीकरण करते हैं। कवि यह भी इंगित करता है कि केवल बादल ही वर्षा की कमी के दोषी नहीं हैं, बल्कि भौतिक लालसा में लिप्त मानव भी उतने ही जिम्मेदार हैं, जिन्होंने प्रकृति के संतुलन को बिगाड़ा है।

पंडित श्रीराम दवे के मेघोपालम्भ काव्य में कवि ने केवल वर्षा के सौंदर्य का वर्णन नहीं किया, बल्कि अतिवृष्टि (अधिक वर्षा) से उत्पन्न समस्याओं को भी मार्मिक रूप में प्रस्तुत किया है। अत्यधिक वर्षा होने के कारण पुराने वृक्ष गलित होकर टूट गए जिनके कारण पक्षियों के घोंसले टूट जाने से पक्षी भी यम के मुख में चले गए । जलाशयों के किनारे पर परिश्रम से बनाई गई गरीबों की कुटिया भी उखड़ गई । मार्ग में लोग पानी से बचने के लिए छाता लिए चलते हैं, उनके अपने वेग से छाते हटाकर, बुढापे से दुर्बलों के तो प्राण भी निकल गए । अतिवृष्टि के सामने मनुष्य स्वयं को असहाय महसूस करता है । मेघोपालम्भ में अतिवृष्टि का चित्रण सामाजिक और मानवीय दृष्टि से महत्वपूर्ण है। कवि ने दिखाया है कि प्रकृति जहाँ जीवनदायिनी है, वहीं उसका असंतुलित रूप मानव जीवन के लिए संकट भी बन सकता है।

पंडित श्रीराम दवे के मेघोपालम्भ काव्य में कवि ने बादलों का अत्यंत सुंदर मानवीकरण किया है। मानवीकरण अलंकार के माध्यम से बादलों को मनुष्य की तरह व्यवहार करते हुए दिखाया गया है। मेघोपालम्भ काव्य में कवि बादलों से सीधे बात करता है, जैसे वे कोई संवेदनशील व्यक्ति हों। वह उनसे वर्षा करने की प्रार्थना और शिकायत दोनों करता है। मेघ वर्षा की प्रार्थना करते हुए बादलों से कहता है कि समुद्र के जल से, अपने हाथों से निकाले जल का भार उठाने वाले पयोधर, अपनी मधुर जल धारा से इस वसुमती को धन धान्य पूर्ण करो । तुम तो देवताओं के

© 2025 रानू शर्मा, डॉ. त्रिलोक चन्द अवस्थी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

अधिपति इन्द्र के धनुर्धर हो, तुम्हें देवों से वैभव और पराक्रम प्राप्त है, तुम तो वसुमती का सन्ताप हरने वाले हो । यह किसान भी सूर्य की कठोर किरणों से व्याकुल पृथ्वी को देखकर दुःखी हो रहा है। हे मेघ ! तुम्हारी कृपा पर जीवन धारण करने वाले उस किसान को जल बरसा कर प्रसन्न करो।

वहीं कवि बादलों से शिकायत करते हुए कहता है कि ये बेचारे भोले भाले किसान हाथ में हल उठाये पृथ्वी पर वर्षा की आशा लगाए, आँखों से तुम्हें देख रहे हैं। जिनके लिये मेघ की बूंदें जीवन का आधार हैं। तुम हाथी जैसे प्रबल होकर भी उनकी आशाओं का भंग क्यों कर रहे हो ? कहीं बादल दयालु मित्र की तरह धरती की प्यास बुझाते हैं, तो कहीं वे निर्दयी बनकर वर्षा नहीं करते या अतिवृष्टि करके लोगों को कष्ट देते हैं तो कहीं दूत बनकर विरही के कष्ट का हरण करते हैं। जैसा कि श्रीराम दवे ने मेघोपालम्भ काव्य में मेघ को दूत बताकर कहा है कि -

कोई प्रणयी अपनी प्रेयसी से विवाह का वादा करके नौकरी के लिए दूर विदेश चला गया, बहुत समय बीतने पर भी जब वह अपने देश न लौटा, तब मन में खिन्न हुई कोई प्रणय विवशा कान्ता आषाढ़ मास में आकाश में उमड़े बादल को देखकर मुग्ध भाव से कहती है कि - हे मेघ ! तुम इस संसार में प्राणियों के प्राण दाता माने गये हो। यह पृथ्वी भी तुमसे ही जीवन पाकर जी रही है। समय आने पर विरही प्रेमियों का सन्देश भी तुम पहुँचाते हो। यह मैंने कविकुल गुरू कालिदास के मेघदूत से जाना है। हे परोपकारपरायण मेघ ! मेरा भी सन्देश मेरे प्रिय को पहुँचा दो। जिससे वह वहाँ से शीघ्र लौटकर मेरे साथ पाणिग्रहण कर ले। जैसाकि उसने यहाँ से जाते समय अपना वादा किया था। वह अंग्रेजों के देश में गया है। वह कहाँ है यह मैं भी नहीं जानती । संभव है वह गौराङ्गनाओं के प्रेम में फँसकर मुझे भूल गया हो। हे बन्धुवर ! तुम अपने देवबल से यह जानकर उसे समझाओ कि "तुम्हारे वियोग में व्याकुल तुम्हारी प्रेयसी बड़े कष्ट से अपना जीवन बिता रही है। वही आधुनिक युग को देखते हुए कवि बादलों से कहते हैं कि इस समय न तो यक्ष जैसे प्रणय विवश प्रेमी है जो प्रिय वियोग की वेदना में तुम्हे दूत बनाकर प्रिया को संदेश भेजें क्योंकि इस युग में कई प्रकार के भौतिक यन्त्र आ गये हैं जिनके द्वारा वे अपनी प्रिय को सन्देश भेज सकते हैं। इसलिए आज तुम्हारी आवश्यकता नहीं होती।

काले चास्मिन् विविधविभवे यान्त्रिके भौतिकाढ्ये
सन्देशान् वै निमिषमितके प्रापयन्तीष्ट देशान्।
नैतच्चित्रं प्रणयि पुरुषे संस्थिते चातिदूरे
नातो नृणां नवयुगकृक्तिश्चान्यथा भावनीया ।।[iv]

इस प्रकार कवि ने बादलों को संदेश पहुँचाने वाले दूत के रूप में भी प्रस्तुत किया है, वहीं कवि बादलों से शिकायत करते हुए कहते है कि मेघदूत में तो तुम यक्ष के दूत बने थे, अब अनावृष्टि को देखकर भी तुम्हारे हृदय में करुणा उदित होती दिखाई नहीं देती । तुम पुष्कर और आवर्तक विश्वविख्यात मेघों के वंशज हो जो पूरे संसार को वर्षा से तृप्त करते हो। कवि बादलों से शिकायत करते हुए प्रश्न करता है कि इस युग में कुटिल किसानों से उत्कोच पाकर जल प्रदान करते हो? इसलिए इसके अभाव में अभी तक नहीं आए ? क्या तुम की इस दुष्ट शासन वाले युग में वित्तशाठ्य वाले धनाढ्य हो गये ?

जातो वंशे भुवनविदिते पुष्करावर्तकानाम्
वृष्ट्या चक्रुर्भुवनमखिलं तर्पितं ये तु काले ।
नायातः किं कुटिलकृषकोत्कोच दत्ताम्बुसारः
किं भूपाले प्रभवति यथा वित्तशाठ्यो धनाढ्यः ।।[v]

क्या तुमने इस युग में धरती पर फैले लोकतन्त्र की गन्ध को तो नहीं सूंघ लिया ? क्या इसी तरह तुम की इन्द्र से अपना अभीष्ट न पाकर कामचोर की तरह अपने कार्य से विमुख हो गये? इस प्रकार इस काव्य में मेघ और कवि के मध्य संवाद है, जो मानव और प्रकृति के बीच संबंध स्थापित करते हैं।

कवि के बादलों में मानव जैसी दया, क्रोध, उपेक्षा और करुणा आदि भावनाएं दिखाई देती हैं। इससे काव्य अधिक जीवंत बन गया है। जब बादल क्रोधित होते हैं तो ऐसे वेग से भयंकर जल प्रपात करते हैं कि धरती में बोये बीज भी उखड़ जाते हैं। अपनी वृष्टि से चारों ओर प्रलय मचाते हुए कई प्रदेशों को जलमग्न करते हुए, बरबादी की भीषण लीला दिखाते हैं। जब ये रुष्ट होते हैं तो ऐसे छिप जाते हैं कि वर्षा के बीत जाने पर, ब्राह्मणों के द्वारा विधि विधान से आह्वान करने पर भी नहीं आते। इन सागर पुत्रों की लीला तो पण्डितों से भी अगम्य है। प्रकृति के अधीन रहने वाले इन बादलों की विलास लीला कौन जान सकता है ? बादलों को किसानों के जीवनदाता के रूप में चित्रित किया गया है। उनके आने से किसानों में आशा और उत्साह जाग उठता है।

आयासि त्वं जलद ! सहसा मेदुरं व्योमकुर्वन्,
आशां चित्ते तृषितमनसां भावयन् वारि वृष्टेः ।
अस्तंगच्छस्त्यतिलघु पुनः कुञ्चयन्नात्मरूपम्
लोकानेवं छलयसि यथा शासका लोकतन्त्रे ।।[vi]

कभी सहसा आकाश में उमड़ घुमड़ कर बादल आते हैं और लोगों के हृदय में जलवृष्टि की आशा जगाते हैं। परन्तु शीघ्र ही अपने उस रूप को समेटकर अस्त हो जाते हैं। ये मेघ लोकतंत्र के शासकों की तरह लोगों से धोखा करते हुए प्रतीत होते हैं । मेघोपालम्भ में बादलों का मानवीकरण काव्य की प्रमुख विशेषता है। इससे प्रकृति सजीव बन जाती है और पाठक को ऐसा अनुभव होता है मानो बादल वास्तव में मनुष्य की तरह सोचते और व्यवहार करते हों।

पंडित श्रीराम दवे द्वारा रचित मेघोपालम्भ काव्य में ग्रामीण जीवन का अत्यंत सजीव और यथार्थ चित्रण मिलता है। कवि ने गाँव के किसानों, उनकी कठिनाइयों, प्रकृति पर निर्भरता तथा लोकजीवन की भावनाओं को मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है। गाँव का जीवन खेती पर आधारित है और खेती वर्षा पर निर्भर करती है। जब बादल समय पर नहीं बरसते या अधिक वर्षा करते हैं, तब किसानों का जीवन संकट में पड़ जाता है। कवि ने इस चिंता और असहायता को व्यक्त किया है। खेत दुबले हो गये हैं, लताओं की सारी शोभा चली गई । खेतों की बाड़ें भी लताओं के सुन्दर शृङ्गार से हीन हो गई । कुंए भी जल के अभाव में खाली पेट हवा खा रहे हैं। लोग बेचारे पानी के लिये भटक रहे हैं परन्तु उन्हें किसी कुंए से पानी नहीं मिल रहा है। देखते देखते पानी के अभाव में गाएं मर रही हैं। श्रावण मास भी बिना जलवृष्टि के बीत गया। तुम्हारे वियोग में यह कृषक वनिता भी आंसू बहा रही है। क्या उसे देखकर भी तुम्हारा निष्ठुर हृदय नहीं पिघलता ? क्या आज का मलिन जल पीकर तुम्हारी आत्मा भी दूषित हो गई है?

प्रतिक्षण रूप बदलने वाले इन बादलों की लीला भी बड़ी विचित्र हैं - जब ये बादल बड़े आनन्द से जल भरे घटाएं बनाकर आ जाते हैं और आषाढ के पहले दिन ही पृथ्वी को प्रसन्न करते हुए समय पर बरसकर धरा को हरी भरी सुन्दर बना देते हैं। जिससे खेतों की भी शोभा बढ़ जाती है और किसान प्रसन्न होते हैं। तालाब भी जल से परिपूर्ण हो जाते हैं। सूखी नदियाँ भी सलिल सुधा से शीघ्र तृप्ति पा जाती हैं। धूप से तपे पहाड़ भी कलकल करते झरनों से आनन्द का अनुभव करते हैं। किसान दिन-रात

© 2025 रानू शर्मा, डॉ. त्रिलोक चन्द अवस्थी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

मेहनत करते हैं, लेकिन उनका जीवन अनेक कठिनाइयों से भरा रहता है। कवि ने उनके श्रम, गरीबी और संघर्ष को संवेदनशीलता से चित्रित किया है । अत्यधिक वर्षा से फसल नष्ट हो जाती है और वर्षा न होने पर सूखा पड़ता है। दोनों परिस्थितियाँ ग्रामीण जीवन को प्रभावित करती हैं। कवि ने बादलों से शिकायत करते हुए किसानों की पीड़ा को व्यक्त करते हुए कहता है कि -

सन्तप्तानां त्वमसि शरणं यद् यदुक्तं त्वदर्थे
किं स्यान्मिथ्या तदपि सकलं कालिदासस्य दौत्ये ।
दृष्टाऽवृष्ट्या व्यथित हृदयां भूमिमेनां विशालाम्
चित्ते ते नोद्भवति हि यतः क्वापि कारुण्यभावः ।।[vii]

मेघोपालम्भ में ग्रामीण जीवन का चित्रण अत्यंत यथार्थ, संवेदनशील और प्रभावशाली है। कवि ने किसानों के संघर्ष, प्रकृति के प्रभाव और ग्राम्य संस्कृति को जीवंत रूप में प्रस्तुत करके लोकजीवन की सच्ची तस्वीर दिखाई है।

पंडित श्रीराम दवे रचित 'मेघोपालम्भ' काव्य में कवि ने ग्रामीण समाज की अनेक समस्याओं के साथ सामाजिक विषमताओं का भी प्रभावशाली चित्रण किया है। समाज में अमीर-गरीब, शोषक-शोषित तथा सुविधा-वंचित वर्गों के बीच जो असमानता है, उसे कवि ने अत्यंत मार्मिक रूप में प्रस्तुत किया है। कवि दिखाते हैं कि प्राकृतिक आपदाओं - जैसे सूखा, अतिवृष्टि और अकाल का सबसे अधिक प्रभाव गरीब किसानों और मजदूरों पर पड़ता है। धनवान वर्ग इन परिस्थितियों से अपेक्षाकृत सुरक्षित रहता है, जबकि किसान अपनी फसल, पशु और जीवनयापन के साधनों से वंचित हो जाता है। इससे समाज में आर्थिक और सामाजिक असमानता और अधिक बढ़ जाती है।

एक तरफ नागरिक वर्षा के अभाव में भी जल से परिपुष्ट होते हुए बहुत प्रसन्न दिखाई देते हैं क्योंकि घर में विपुल जल देने वाले नल आ गए हैं इसलिए वे घर में ही जल क्रीडा करते हैं वही दूसरी तरफ गांवों में कृषक व मजदूर लोग सूखा और अकाल जैसी समस्याओं से पीडित हैं। इसीलिए कवि बादलों से कहता है कि तुमने तो कई विषम संक्रान्ति काल देखे हैं। पृथ्वी शासकों के साम्राज्य को भी भोगा है । कोई तुम्हारे लिए हितकर हो या शत्रुताभावपूर्ण ही हो तुम इतने कुपित होकर मुंह मत मोडो।

दृष्टा नैके जलद ! विषमाः कालसंक्रान्तिकल्पाः
साम्राज्यं वै विविध वसुधाशासकानाञ्चभुक्तम्।
आयान्त्येके तव हितकरास्तीर्थपंकाश्च केचित्
मा मा भूया अतिशयरुषाक्रान्त एतेन बन्धो !।।[viii]

काव्य में किसानों की दयनीय स्थिति, भूख, कर्ज और संघर्ष का चित्रण सामाजिक विषमता को उजागर करता है। दूसरी ओर, कुछ लोग सुख-सुविधाओं में जीवन बिताते हैं। कवि लोकतन्त्र की इस असमान व्यवस्था पर अप्रत्यक्ष रूप से प्रश्न उठाते हुए बादलों से कहते हैं कि -

किं वाऽऽघ्रातो भुवनवितता लोकतन्त्रस्य गन्धः
यत्राभीष्टं भृतकनिवहो बन्धबाधाऽऽग्रहाद्यैः ।
रुध्वा कार्यं प्रबल हठतो विन्दते संघशक्त्या
येनैवं त्वं भवसि विमुखो वासवाऽनाप्त कामः ।।[ix]

इस काव्य में कवि समाज में समानता तथा संवेदनशीलता की आवश्यकता को व्यक्त करते हैं। इस प्रकार, 'मेघोपालम्भ' केवल प्रकृति या वर्षा का काव्य नहीं है, बल्कि यह समाज की वास्तविक समस्याओं और सामाजिक विषमताओं को उजागर करने वाला संवेदनशील काव्य भी है।

युगेऽद्य जाते परिवर्तिताङ्गे त्वयापि बन्धो ! परिवर्तनीयम् ।
कालस्य दृष्ट्वा कलितानि मित्र ! त्वया तथैवास्ति नु वर्तनीयम् ।।[x]

इस काव्य के अन्त में मेघ कहते हैं कि यह सारी सृष्टि चलायमान है । यहाँ कुछ भी स्थिर नहीं है न तो सुबह न शाम, न कोई धनिक और न राजा । गुलामों के लिए भी कोई स्थान नहीं है, सभी बन्दीभूत हैं । सूर्य हो, चन्द्र हो, चाहे तारे सभी परिवर्तनशील हैं। इसलिए तुम्हें भी बदलना होगा और समय के अनुसार चलना होगा ।

इस काव्य के अंत में कवि ने उर्दू भाषा की एक सुंदर कविता "ये बादल" का संस्कृत अनुवाद भी प्रस्तुत किया है । जिससे यह ग्रंथ भाषाई समन्वय और सांस्कृतिक संवाद का भी एक सुंदर उदाहरण बन गया है। "मेघोपालम्भनम्" केवल मेघों की निंदा या प्रशंसा का काव्य नहीं है, बल्कि इसमें मानवीय भावनाओं, पर्यावरण की चिंता और प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व की पुकार भी अभिव्यक्त हुई है।

Creative Commons (CC) License
This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.

सन्दर्भ सूची

i राधावल्लभ त्रिपाठी, संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास, 2007, पृ. 7–8

ii मञ्जुलता शर्मा, आधुनिक संस्कृत साहित्य की परिक्रमा, 2011

iii पं. श्रीराम दवे, मेघोपालम्भनम् श्लोक -1

iv वही, श्लोक -2

v वही, श्लोक - 3

vi वही, श्लोक - 20

vii वही, श्लोक - 17

viii वही, श्लोक - 6

ix वही, श्लोक - 25

x वही, श्लोक - 7

© 2025 रानू शर्मा, डॉ. त्रिलोक चन्द अवस्थी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/